"शौर्य दिवस"

01जनवरी, 1818

- **"01जनवरी, 1818: 208 वां शौर्य दिवस" -**

"**01**जनवरी दुनिया के लए नया साल होगा, परन्तु भारत के मूलनिवा सयों के लए तो यह शौर्य दिवस है"

"जातीय गुलामी, प्रताड़ना, शोषण, अत्याचार, भेदभाव, छुआछूत, असमानता का बदला लेने के लए **01** जनवरी, **1818** को **28** हजार पेशवाई ब्राह्मणों को **500** महारों ने गाजर-मूली की तरह काट डाला था"

आइए, भीमा कोरेगांव के इतिहास के पन्नों को पलटते हैं:----

भीमा कोरेगांव महारों के नाम पर स्था पत महाराष्ट्र के पूना जिले की शरूर तहसील का एक छोटा-सा, परन्तु ऐतिहा सक गांव है। यह गांव भीमा नदी के तट यानि कनारे यानि कोरे पर बसा हुआ है।

भीमा कोरेगांव का घटनाचक्र छत्रपति शवाजी महाराज की मृत्यु के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र संभाजी महाराज को सत्ता मलने से होता है।

छत्रपति संभाजी महाराज ने पेशवाई ब्राह्मण के बजाय उत्तर भारत के एक ब्राह्मण को अपने राज्य का प्रधानमंत्री बना दिया था जिससे पेशवाई ब्राह्मण नाराज हो गये थे और उन्होंने षड़यंत्रपूर्वक छत्रपति संभाजी महाराज की हत्या करवा दी थी। इससे भी पेशवाई ब्राह्मणों को तसल्ली नहीं हुई, तो उन्होंने छत्रपति संभाजी महाराज के शव के छोटे-छोटे टुकड़े करके चारों ओर दूर तक फैंक दिए थे।

एक राजा संभाजी महाराज हुए जो थे महार!
जिनके ब्राह्मणों ने टुकड़े कये थे हजार!!

- ## पेशवाओं की कुरूरता -

छत्रपति साम्राज्य के बाद जब बाजीराव पेशवा का शासन आया तो उसने महारों पर अन गनत अत्याचार शुरू कर दिये थे। उसने बड़ी क्रूरता से वर्ण-व्यवस्था लागू कर जाति-बंधनों का पालन करवाना शुरू कर दिया था। जैसा क वर्तमान समय में बाजीराव पेशवाई ब्राह्मणों की छ व दिखाई दे रही है।

एक ओर तो महारों से सड़क पर चलने, शक्षा ग्रहण करने, पक्के मकानों में रहने, साफ पानी पीने, नये व साफ वस्त्र पहनने, ताजा खाना खाने जैसे अ धकार छीन लये थे तो दूसरी ओर महारों को परेशान करने के लए उनको दोपहर में केवल **12-01** बजे के बीच ही कमर में झाड़ू व गले में हांडी बांधकर घरों से बाहर निकलने के लए पाबंद कर दिया था। पेशवाई ब्राह्मणों के अत्याचारों से महार बहुत ज्यादा परेशान हो गए थे, तो उन्होंने पेशवाओं से प्रतिशोध लेने की ठान ली।

इसके लए महारों ने अंग्रेजी सेना में भर्ती होने का निर्णय लया।

- ## भीमा कोरेगांव की घटना -

जब भीमा कोरेगांव में अंग्रेजी सेना और पेशवाई सेना **01** जनवरी, **1818** को युद्ध के लए आमने-सामने थीं तो अंग्रजी सेना में मात्र **500** महार सैनिक थे, जब क पेशवाई सेना में **28000** सैनिक थे। महारों के सेनापति सदनाग थे महार सैनिकों का नेतृत्व अंग्रेजों की ओर से कैप्टन स्टाटन ने कया था जिसके सेनापति सदनाग थे महार सैनिकों का नेतृत्व रतनाक, जतनाक और भीकनाक की कया था ऐसा कहा जाता है क इन महार सैनिको को युद्ध के मैदान में देख पेशवाओं के 2000 सैनिक युद्ध प्रारंभ होने से पहले ही भाग खड़े हुए थे जिस कारण 30,000 मे से केवल 28,000 सैनिक बचे थे | पेशवाई सेना को देखकर अंग्रेजी सेना के अफसरों के हाथ-पैर फूल गए थे, परन्तु महार सैनिक पेशवाओं से बदला लेने के लए तड़प रहे थे और उन्होंने अंग्रेजी अफसरों को कहा क हम मर जाएंगे, परन्तु पीछे नहीं हटेंगे।

1 दिन एक रात यह युद्ध चला जिसमें अंग्रेजी सेना के 276 महार सैनिकों की शहादत हुई | ब्रिटिश सरकार ने इन 276 महार सैनिकों की याद में भीमा कोरेगांव में एक 75 फ़ीट ऊंचा वजय स्तंभ बनवाया था जिस पर इन शहीद सैनिकों के

नाम वजय स्तंभ पर लख गए थे जो आज भी भीमा कोरेगांव में स्थित है | इस प्रकार से महारों ने छत्रपति संभाजी महाराज की हत्या और महारों पर पेशवाई ब्राह्मणों के अत्याचारों का बदला ले लया था।

28000 में **500** का भाग देने पर परिणाम **56** आता है यानि **01** महार सैनिक ने **56** ब्राह्मण सैनिकों को मौत के घाट उतारा था, इसी घटना से **56** इंच के सीने की कहावत प्रच लत हुई थी।

अंग्रेजों ने इसी जीत की खुशी में भीमा कोरेगांव में **30** फीट ऊँचा एक वजयस्तम्भ बनवाया जिस पर अंग्रेजी सेना के अफसर व मूलनिवासी प्रत्येक वर्ष **01** जनवरी को जाकर महारों के वीर शहीदों को श्रद्धासुमन अ र्पत करते थे जो एक परम्परा बन गई थी जिसे बाबासाहेब डॉ भीमराव अम्बेडकर जी ने भी ताउम्र निभाया था जो आज भी अनवरत जारी है तथा देश के लाखों मूलनिवासी प्रत्येक वर्ष 01 जनवरी को भीमा कोरेगांव जाकर अपने पुरखों के शौर्य का नमन करते हैं।
भीमा कोरेगांव की क्रांति एक संयोग नहीं थी, बल्कि ब्राह्मणों के अत्याचारों का प्रतिशोध थी।

- ## डॉ आंबेडकर के वचार -

भारत में दो संस्कृतियों का संघर्ष कालांतर से आज तक जारी है। एक ओर श्रमण संस्कृति तो दूसरी ओर ब्राह्मण संस्कृति। एक ओर नाग संस्कृति तो दूसरी ओर आर्य संस्कृति। बाबा साहेब डॉ आंबेडकर अपनी कताब "भारत में क्रांति और प्रतिक्रांति" में लखते हैं की भारत का इतिहास दो संस्कृतियों के बीच संघर्षों का इतिहास है इसके अलावा और कुछ नहीं है|

श्रमण संस्कृति अर्थात नाग संस्कृति मानव कल्याण की संस्कृति रही है जो मानव-मानव एक समान की संस्कृति है, तो ब्राह्मणी संस्कृति बनाम आर्य संस्कृति छुआछूत, भेदभाव, असमानता, वषमता की पोषक रही है। ब्राह्मणी संस्कृति यज्ञ, हवन, कर्मकांड, पूजापाठ अंध वश्वास की संस्कृति है जिसकी झलक वर्तमान में आपको देशभर में बहुतायत में देखने को मल रही है यानि ऐसा लग रहा है क वर्तमान में पेशवाई ब्राह्मणों का ही राज चल रहा है।

सनद रहे, बाबासाहेब डॉ भीमराव अम्बेडकर के दादाजी परमश्रद्धेय मालोजी सकपाल साहब और बाबासाहेब के पताजी सम्माननीय रामजी सकपाल साहब भी सेना में थे।

- ## मूलनिवा सयों बहुजनो की शहादत -

महारो ने न केवल इस युद्ध में प्राप्त की बल्कि महारों ने और इस देश के बहुजन मूलनिवा सयों **(SC, ST or OBC)** ने 1856 के प्रथम वश्व युद्ध में सैकड़ों बहुजन मूलनिवा सयों ने अपना खून बहकर शहादत दी थी इसके अलावा देश की आज़ादी में समय समय पर तिलका मांझी, शहीद उदेया चमार, सदो और कान्हू, मातादीन वाल्मी क, वीरा पासी, बांके चमार, गंगादीन मेहतर, मक्का पासी, माता उदा देवी पासी, झलकारी बाई, चेतराम जाटव, बालूराम मेहतर, बिरसा मुंडा, शहीद उधम संह, मंगू राम चमार, धन संह कोतवाल और भगत संह आदि शहीदों ने अपना जीवन देश के नाम कया।

महार नागवंशी थे और आज भारत में नागवंशी व भन्न राज्यों में पाये जाते हैं जिनकी शाखाएं अनेक नामों से जानी-पहचानी जाती हैं। मजोरम में मजो, नागालैण्ड में नाग, उत्तर प्रदेश में चमार-जाटव, राजस्थान में चमार-बैरवा-मेघवाल, अन्य राज्यों में आसामी, गोरखा, त मल, सक्ख आदि नागवं शयों की ही शाखाएं हैं।

स्वतंत्रता के बाद भी महार रेजीमेंट का सफरनामा गौरवशाली रहा है। वर्ष 1959 में चीनी सेना को महार रेजीमेंट ने अपनी ताकत पर लद्दाख से मार भगाया था। इसी प्रकार वर्ष 1965 में भी महार रेजीमेंट ने पा कस्तान के छक्के छुड़ाये थे। अग्रवत वर्ष 1971 में भी पा कस्तान से बांग्लादेश को अलग कराने में महार रेजीमेंट ने अपनी महत्वपूर्ण भू मका निभाई थी।

01 जनवरी दुनिया के लए नया साल होता है, परन्तु देश के मूलनिवा सयों के लए तो यह शौर्य दिवस है जिस पर हमें गर्व महसूस होता है यह महारों की गौरवगाथा है! **500** महारों ने **28000** ब्राह्मणों को हराकर इतिहास लखा था जिसे हर बहुजन गाता है! एक महार बाबासाहेब डॉ भीमराव अम्बेडकर साहब ने ब्राह्मणों को हराकर सं वधान लखा था|

संदर्भ सूची (Bibliography)–

- बुक्स
- इंटरनेट
- सोसल मीडिया

कपिल बौद्ध (LL.B)